Volume : 5 | Issue : 3 | March 2016 • ISSN No 2277 - 8179 | IF : 3.508 | IC Value : 69.48

U.T.I. Evam Homeopathic Upchar
यू. टी. आई. एवं होम्योपैथिक उपचार।

Medical Science

KEYWORDS :

Dr. Ramesh Prasad

Research Officer (H) S.1, Regional Research Institute for Homoeopathy, Dr. MPK Homoeopathic Medical College & Hospital, Station Road, Jaipur - 302 006, Rajasthan (India)

यू. टी. आई. जिसे यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्षन कहते हैं, यह पेषाब मार्ग में होने वाले संक्रमण की बिमारी है। इस बिमारी के लिये बडी आंत का बैक्टीरिया ई. कोलाई. जिम्मेदार होता है। ई. कोलाई के अलावा अन्य बैक्टीरिया, फंगस के कारण भी यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्षन होता है।

यूरिनरी सिस्टम के अग जैसे किडनी, यूरिनरी ब्लैडर और यूरेथ्रा में से कोई भी अंग जब संक्रमित हो जाता है तब उसे यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्षन कहते हैं। इस बिमारी में यूरिनरी ट्रैक्ट का निचला हिस्सा प्रभावित होता है और यह संक्रमण यूरेथ्रा तक फैल जाता है। मरीज यदि समय रहते ईलाज न करवाये तो यह ब्लैडर और किडनी को भी नुकसान पहुंचा सकता है।

Bladder Infection

सामान्यतः सबसे ज्यादा यू. टी. आई का प्रभाव महिलाओं पर होता है, परंतु यह बिमारी बच्चों से लेकर बुजुर्ग किसी को भी हो सकता है। बच्चों में यू. टी. आई. की समस्या कन्जेनाइटल प्राब्लम यानि पेषाब की थैली या गुर्दे में किसी भी तरह की समस्या होने से ही होता है।

महिलाओं में 20 से 45 वर्ष की उम्र में यू. टी. आई. की समस्या ज्यादा होती है। मेनापॉज के बाद भी महिलाओं को यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्षन एस्ट्रोजन हारमोन का निर्माण कम होने के कारण होता है।

कारणः

- पुरूषों के मुकाबले महिलाओं मे यूरेथ्रा का आकार छोटा होता है, इस कारण बैक्टीरिया ब्लैडर को जल्दी प्रभावित करते है।
- पेषाब लगने पर भी देर तक पौचालय नहीं जाना।
- निजी अंगों की साफ–सफाई पर ध्यान न देने से भी कई बार संक्रमण होता है।
- पौच जाने के बाद सही तरीके से सफाई न करना।
- किडनी की पथरी और षुगर के मरीजों को भी यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्षन की संभावना रहती है।

लक्षणः–

- मरीज जब भी मूत्र त्याग करता है, तब जलन महसूस होती है।
- पेषाब का रंग गाढा होना।
- पेट के निचले हिस्से में दबाव बना रहना।
- पेट और कमर में दर्द होना।
- मरीज को पेट में भारीपन महसूस होना।
- मरीज के पेषाब में दुर्गंध और खून निकलना।
- मरीज को थकान महसूस होना।
- कभी कभी मरीज को बुखार, कंपकपी और उल्टी होना।

जांच और बचावः–

Urine may contain pus (a condition known as pyuria) as seen from a person with sepsis due to a urinary tract infection.

- यूरिन कल्चर और अल्ट्रसाउंड के जरिए इस समस्या का पता चलता है।
- इस बिमारी से बचने के लिये ज्यादा से ज्यादा पानी और तरल पदार्थ पीना चाहिए।
- मूत्र त्याग की इच्छा होने पर पेषाब करना चाहिए एवं अपने निजी अंगों की सफाई पर ध्यान देना चाहिए।
- पौच के बाद सही तरीके से सफाई करना चाहिए।
- सार्वजनिक पौचालयों के इस्तेमाल के वक्त सावधानी बरतनी चाहिए।
- घर के पौचालय को साफ सुथरा करना चाहिए।

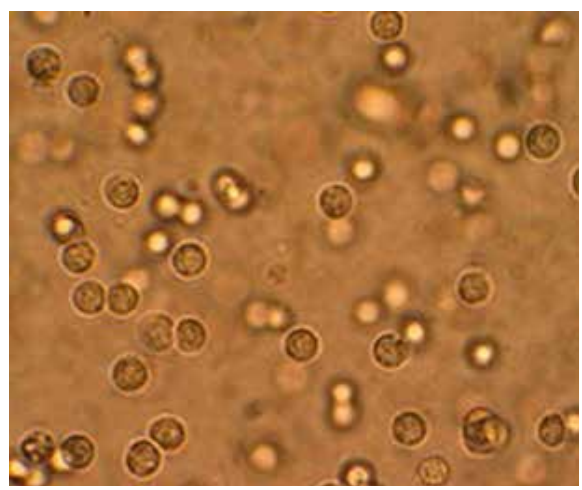

Multiple white cells seen in the urine of a person with a urinary tract infection using amicroscopy

होम्योपैथीक उपचारः–

01. एपिस मेलः मरीज मूत्र त्याग करते समय जलन और पीडा महसूस करता है। मरीज का पेषाब हल्का रंग, अपर्याप्त एवं बदबूदार होता है। मरीज बार–बार मूत्र त्याग के लिये बेबस रहता है और पेषाब के अंतिम क्षण में जलन, डंक मारने जैसा दर्द हो तब एपिस मेल 6, 30 रामबाण जैसा काम करता है।

< बंद गर्म कमरे में साने के बाद ।
< खुली हवा में, ठंडे पानी या ठंडे पानी से नहाने पर कपडे खोल देने पर।

02. अरजेंटम नाइट्रिकमः मरीज मूत्र का त्याग दिन या रात में अनजाने में कर देता है। मूत्र मार्ग में सूजन, लाल, जलन, खुजली और दर्द भरा रहता है। पेषाब खून से भरा हुआ, गहरा रंग और अपर्याप्त मात्रा में हो तब 6, 30षक्ति की दवा देने से मरीज को आराम मिलता है।

< ठंडी हवा से, ठंडे भोजन से, आइसक्रीम तथा असाधारण मानसिक तनाव होने से।
< खुली हवा में, ठंडे पानी से नहाने पर।

03. अर्सेनिकम एलबमः मरीज का ब्लाडर षक्तिहीन हो जाता है। मूत्र का रंग फीका और अपर्याप्त मात्रा में हो। उपरोक्त लक्षण के साथ यदि मरीज को बहुत बेचैनी , बार बार जगह बदलना, दुःखी, डरा हुआ, मरने से डर लगे तथा मरीज कहे कि दवा लेना बेकार है, यह बिमारी ठीक नहीं होगी, मैं मरने जा रहा हूं तब अर्सेनिक एलब्म जरूर देना चाहिए। मरीज को ठंडे पानी की प्यास ज्यादा लगती है, परन्तु थोडा थोडा पानी पीता है। उपरोक्त लक्षण मिलने पर 30, 200 षक्ति की दवा देने पर मरीज ठीक हो जाएगा।

< आधी रात में, ठंडे भोजन या ठंडे पानी पीने से, छूने से अराम करने से,

मदिरा पान से ।
< झगर्म से ।

04. बैलाडोनाः जिस मरीज का षारिरिक बनावट और स्वभाव बिलीअस, प्लेथॉरिक हो उसमें अच्छा काम करता है। जब मरीज को एक्यूट यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्षन हो, पेषाब रूक जाए, अपर्याप्त, गहरा रंग, रक्तमेह और फॉस्फेट से भरा हो तब बेलाडोना 6,30, 200षक्ति की दवा देने से मरीज को बहुत आराम मिलता है।

< चलने से, छूने से,षोरगुल से, ठंडी हवा के झोंके से आराम करने से।
< गर्म रूम में।

05. वेन्जोइक एसिडः जब बुढापा में यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्षन हो, आमवात रोगी, सुजाक, प्रॉस्टैट ग्रन्थि से ग्रसित हो तब इस दवा के बारे में सोचना चाहिए। पेषाब गहरा भूरा, यूरिक एसिड बढा हुआ हो तथा मूत्र बूंद बूंद पास हो तब इस दवा की 6, 30, 200 षक्ति की खुराक देने से मरीज को काफी राहत मिलती है।

06. बैरवैरिस भलगैरिसः जब मरीज को किडनी में जलन, वेदना, बुदबुदाने का महसूस हो।मूत्र हरे रंग का, रक्त रंजित, चिपचिपा म्यूकस पारदर्षी, जैली जैसा, अवसाद तथा दर्द बांयी किडनी की तरफ और मूत्र त्याग करते समय। दर्द नीचे जंघे की तरफ हो तब बैरवैरिस भलगैरिस से ही मरीज को राहत मिलती है। उपरोक्त लक्षण के साथ यदि मरीज को बांयी किडनी में पथरी एवं बार बार पेषाब करने की इच्छा हो तब यह दवा 6, 30, 200 षक्ति की खुराक देने से मरीज ठीक हो जाता है।

07. कैन्थारिसः— मरीज बार बार मूत्र त्याग करना चाहता है लेकिन एक बार में कुछ बूंद मात्र त्याग कर पाता है जो कि रक्त मिला हुआ रहता है। पेषाब करने के पहले, करते समय एवं बाद में असहनीय दर्द, जलन के साथ जबरदस्त दर्द ब्लाडर में हो तब कैन्थारिस 6, 30, 200षक्ति की दवा से मरीज को आराम मिलता है।

08. लाइकोपोडियमः मरीज को पेषाब करने से पहले कमर दर्द हो, पेषाब करने के बाद आराम हो जाता हो, पेषाब धीरे धीरे एवं पूरा जोर लगाना पडे तथा पेषाब का रंग लाल अवसाद हो तब इस दवा का चुनाव करना चाहिए। बच्चा जब पेषाब करने से पहले रोता हो, दिन में रोता हो और रात में आराम से सोता हो और रात में ज्यादा पेषाब करता हो तब लाइकोपोडियम 30, 200 षक्ति की दवा देने से रोगी चंगाा हो जाता है।

Reference:

1. Allen's Keynote M.M., Pocket Manual of H.M.M. & Repertory by Willliam Boericke, Wikipedia.org U.T.I., English to Hindi Sabdkosh